

कौसुर्विन्दि patron. von कुसुर्विन्दि ÇAT. Br. 12, 2, 13.

कौसुर्विक (von 1. कुसुर्वि) adj. auf schlechten Wegen gehend, betrügerisch P. 5, 2, 75, Sch. ĠATĀDH. im ÇKDr.

कौस्तुभ 1) N. eines bei der Quirlung des Oceans zum Vorschein gekommenen Juwels, welchen Vishṇu auf der Brust (am Halse) trägt; m. AK. 1, 1, 24. TRIK. 1, 1, 42. H. 223. MBH. 1, 1147. HARIV. 12187. BHĀG. P. 6, 9, 28. II.: मणिपत्नं च कौस्तुभम् R. 1, 45, 39. — MBH. 3, 13563. PĀNĀT. 44, 15. RAGH. 6, 49. 10, 10. BHĀG. P. 2, 2, 10. 3, 21, 11. 8, 8, 5. कौस्तुभलक्षणम् m. ein Bein. Vishṇu's Wils. कौस्तुभवत्तम् desgl. HĀR. 9. — 2) m. eine best. Fingerverbindung: घनामाङ्गुलसंलग्ना दक्षिणस्य कनिष्ठिका । कनिष्ठयान्यया बद्धा तर्जनीया दक्षया तत्रा ॥ वामानां च वद्वीयादक्षिणाङ्गुलमूलके । अङ्गुलमध्यमे भूयः संयोग्य सरलाः पराः ॥ चतस्रोऽप्यग्रसंलग्ना मुद्रा कौस्तुभसंज्ञिका । TANTRAS. im ÇKDr. — 3) n. eine Art Oel (सर्पपोद्भव) Schol. zu KĀTJ. ÇR. 1, 8, 37. — 4) Titel einer Schrift Verz. d. B. H. No. 1403. Vgl. शब्दकौस्तुभ. — Das Wort wird auf कुस्तुम् zurückgeführt.

कौस्त्रं n. nom. abstr. von कुस्त्री gaṇa पुत्रादि zu P. 5, 1, 130.

कौस्थलपुरं n. N. pr. einer Stadt LIA. II, 933. — Vgl. कुष्ठल.

कौकुडं patron. von कौकुड gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112. 2, 4, 58, Sch.

कौकुडि 2tes patron. ebend.

कौकुलीय (कौकुलीय?) m. pl. Name einer nach Kohala benannten Schule Gobh. 3, 4, 29.

कौकुलीपुत्र (कौकुली = कौकुडी + पुत्र) m. N. eines Grammatikers TAIT. PRĀT. 2, 5.

कौकुलितं patron. von कौकुल gaṇa शिवादि zu P. 4, 1, 112.

क्रैस्, क्रैसति und क्रैसयति sprechen oder leuchten DhĀTUP. 33, 90. — Vgl. कुंस्, कुंस्, क्रैस्, क्रैप्.

क्रैय, क्रैयति verletzen, tödten DhĀTUP. 19, 38. — Vgl. क्रैय, क्रैय.

क्रैस्, क्रैस्यति krumm sein; scheinen DhĀTUP. 26, 6. — caus. क्रैस्यति DhĀTUP. 19, 65. VOP. 18, 22. — Vgl. कुंस्, कुंस्, क्रैस्, क्रैप्.

क्रैस् nom. ag. von क्रैस् VOP. 26, 30. — Vgl. चक्रैस्.

क्रू, क्रूनाति und क्रूनीति einen best. Ton von sich geben DhĀTUP. 31, 10. WEST. und WILS. auch क्रू, क्रूनाति und क्रूनीति. — Vgl. क्रू, क्रूय.

क्रूय, क्रूयति; क्रौपयिवा VOP. 26, 207. 1) feucht sein. — 2) einen best. Laut von sich geben (vgl. क्रू) DhĀTUP. 14, 14. — 3) stinken (vgl. पूय) KĀVĪKĀPADR. im ÇKDr. — caus. क्रौपयति durchnässen P. 7, 3, 36. 86. VOP.

18, 8. चेलक्रौपम् (वृष्टे देवः Sch.) P. 3, 4, 33. वस्त्रक्रौपम् Sch. ÇIC. 10, 49.

— अभि befuchten: आपो वै सर्वमन्नं ताभिर्हृदिमभिर्कूयमिवादति यदिदं किम्वदति ÇAT. Br. 14, 1, 2, 14.

क्रूयितरं nom. ag. von क्रूय P. 3, 2, 152, Sch.

क्रौपम् s. u. क्रूय.

क्रैस्, क्रैसति krumm sein DhĀTUP. 15, 47. — Vgl. क्रैस्.

क्रै n. nach SĀJ. von क्रै = प्रज्ञापति abzuleiten: das dem Praḡāpati Genehme ÇAT. Br. 10, 3, 2, 4. 4, 2, 4. 15. 21. fgg.

क्रौम्बू = क्रियाम्बु AV. 18, 3, 6.

क्रैम् erleuchten (प्रकाशयतिकर्मन्) NIK. 2, 25. — Vgl. क्रैम्, क्रैस्.

क्रैकच (onomatop.) 1) m. n. Säge AK. 2, 10, 35. TRIK. 3, 3, 340. H. 918. an. 3, 138. MED. k. 14. (तत्) मध्येन पाठयामास क्रैकचो दार्विवोच्छ्रितम्

MBH. 3, 882. MĀRK. P. 8, 140. MĀRK. 176, 2. क्रैकचमिह शरीरे वीक्ष्य दातव्यमस्य 156, 4. दंष्ट्राक्रैकचेन PĀNĀT. 167, 18. — 2) m. N. einer Pflanze, Capparis aphylla Roxb. (s. करीर) H. an. MED. — 3) f. या Pandanus odoratissimus (s. केतक) RATNAM. im ÇKDr. — Vgl. क्रैकर.

क्रैकचक्कर (क्रै + क्कर Blatt) m. Pandanus odoratissimus (s. केतक) TRIK. 2, 4, 38. H. 1132. HĀR. 92.

क्रैकचपत्र (क्रै + पत्र Blatt) m. der Teakbaum (s. शाक) RĪGĀN. im ÇKDr.

क्रैकचपाद् (क्रै + पाद्) m. Eidechse, Chamäleon TRIK. 2, 5, 11. HĀR. 218.

क्रैकचपृष्ठी (क्रै + पृष्ठी) f. ein best. Fisch, Cojus Cobojus Ham. TRIK. 1, 2, 17. HĀR. 189.

क्रैकण m. eine Art Rebhuhn, Perdix sylvatica ÇABDAR. bei WILS. ÇKDr. angeblich nach AK. — Vgl. कृकण, क्रैकर.

क्रैकर m. 1) (onomatop.) eine Art Rebhuhn, Perdix sylvatica AK. 2, 5, 19. H. 1338. an. 3, 527. MED. r. 122. SUGA. 1, 73, 7. 201, 1. Verz. d. B. H. No. 897. पत्रोर्णं चोरयित्वा तु क्रैकरं निपेक्षति (च गच्छति MĀRK. P. 15, 27) MBH. 13, 5501. — 2) Capparis aphylla Roxb. (s. करीर) AK. 2, 4, 2, 57. H. 1130. H. an. MED. — 3) Säge TRIK. 3, 3, 430. H. an. MED. — 4) ein armer Mann H. an. MED. — 5) Krankheit TRIK. — Vgl. क्रैकच.

क्रैकुचक्रं m. N. pr. eines Buddha, eines Vorgängers von Çākjamuni H. 236. LALIT. ed. Calc. 5, 22. BURN. Intr. 223. 414. Z. f. d. K. d. M. IV, 503, N. 2.

क्रैतु nur im partic. praes. med. zu belegen; viell. toben, brausen: ऋतुं त्वं रोदसी उभे क्रैतमाणमकृपेताम् RV. 8, 63, 11. — Vgl. ऋक्रैतिन्, वक्रैत.

क्रैत (von क्रैतु) s. वक्रैत.

क्रैतु m. UN. 1, 77. 1) Rathschluss, Plan; Absicht, Vorsatz: विश्वे देवाः समनसः संकेता एके क्रैतुमभि वि यंति साधु RV. 6, 9, 5. क्रैतुं सचते वरूणास्य देवाः 4, 42, 1. 1, 136, 4. 10, 61, 1. तथैवेदमिन्द्रं क्रैतुं यथा वशः 8, 30, 4. 83, 4. 1, 163, 7. अस्य क्रैतुं सचते अग्रदपितः der Achtsame hält sich an seinen Rath 143, 2. ममेदं क्रैतुवत्सो मम चित्तमुपायसि AV. 1, 34, 2. तं नो देवा ऋतुं संसीरतु क्रैतुम् RV. 10, 37, 5. कस्य क्रैतुं मरुतः कस्य वर्षता के याव 1, 39, 1. 3, 6, 5. 7, 76, 1. (उषसः) त्रिंशत् योजनान्यत्रैका क्रैतुं परि यंति सृष्टः die Morgenröthen durchlaufen dreissig Jōgana, jede einzelne ihren Plan (d. h. ihre vorgezeichnete Aufgabe) innerhalb eines Tages 1, 123, 8. क्रैतुं दधिका ऋतुं संतवीवत् 4, 40, 4. यदेकं क्रैतुना विन्दसे वसुं mit einem Vorsatz d. i. auf den ersten Versuch 2, 13, 4. स यदेव मनसा कामयत इदं मे स्यादिदं कुर्वेति स एव क्रैतुरय यदसौ तत्समृध्यते स दत्तः ÇAT. Br. 4, 1, 2, 1. हृत्सु कृपं क्रैतुर्मनोभवः प्रविष्टः 3, 3, 2, 7. 2, 1, 2, 11. 14, 7, 2, 7. ऋतुं क्रैतो स्मर कृतम् BAH. ĀR. UP. 3, 15. VS. 40, 17. — 2) Verlangen: पुराकाशं शुषस्व नः । इन्द्रं क्रैतुर्हितं तं वृकन् RV. 3, 82, 4. यदीमुष्मन्तमुष्मन्तमनु क्रैतुर्मायं क्रैतुर्मायं विद्याय जीर्जन्तु 10, 11, 3. त्वार्जुना ह्रीन्द्रं क्रैते अस्मि zu deines Verehrers Verlangen bin ich da d. h. nach seinem Wunsch und Auftrag 7, 23, 4. instr. willig, gern (hierher und zu 1.): क्रैता नः शुग्धि रायः RV. 4, 21, 10. क्रैता रथीरभो वार्याणाम् 6, 3, 3. 16, 26. अथ क्रैता मघवतुर्भ्य देवा ऋतुं विश्वे अददुः सोमपेयम् 5, 29, 5. — 3) Vermögen, Tüchtigkeit, Wirksamkeit NAIGH. 2, 1. ऋस्य क्रैता सनिधा-